REET 2025 LEVEL-1 & 2

वंदन बैच

हिंदी

समास

Part -2

LIVE 20-01-2025 11:00 AM

2. तत्पुरुष समास = जिस समास में पूर्व पद गौण तथा उत्तर पद प्रधान होता है। तत्पुरुष समास कहलाता है। ऐसे पदों के बीच (कर्म कारक से लेकर अधिकरण कारक) तक विभक्तियों का लोप किया जाता है।

परसर्ग (कारक चिह्न) के आधार पर तत्पुरुष समास के छः भेद होते है।

(i) कर्म तत्पुरुष समास (द्वितीया तत्पुरुष) – इस समास में समस्त पद के बीच कर्म कारक के विभक्ति चिन्ह 'को' का प्रयोग होता है। जैसे-

6-7

स्वर्गप्राप्त = स्वर्ग को प्राप्त
पाकेटमार = पाकेट को मारने वाला
गगनचुम्बी = गगन को चूमने वाला
यशप्राप्त = यश को प्राप्त करने वाला
पतितपावन = पापियों को पवित्र करने वाला
सिरतोड़ = सिर को तोड़ने वाला
मतदाता = मत को देने वाला
जीभर = जी को भरने वाला

तिलकुटा = तिल को कूटकर बनाया हुआ
जेबकतरा = जेब को काटने वाला
विरोधजनक = विरोध को जन्म देने वाला
चिड़ीमार = चिड़िया को मारने वाला
आपत्तिजनक = आपत्ति को जन्म देने वाला
कठफोड़ = काठ को फोड़ने वाला
मोक्षप्राप्त = मोक्ष को प्राप्त
यशप्राप्त = यश को प्राप्त

(ii) करण तत्पुरुष समास (तृतीया तत्पुरुष) – इस समास में समस्त पद के बीच करण कारक के चिन्ह 'से' या 'के द्वारा' का प्रयोग होता है। जैसे –

अश्रुपूर्ण = अश्रु से पूर्ण

दयार्द्र = दया से आर्द्र

तुलसीकृत = तुलसी द्वारा कृत

रोगातुर = रोग से आतुर (व्याकुल)

आँखोदेखी = आँखों से देखी

गोबर-गणेश = गोबर से निर्मित गणेश

जन्मान्ध = जन्म से अन्धा

मुँहमाँगा = मुँह से माँगा

रत्नजड़ित = रत्न से जड़ित

जलावृत्त = जल से आवृत्त (ढका हुआ)

गुरुदत्त = गुरु द्वारा दत्त

बैलगाड़ी = बैलों से चलने वाली गाड़ी

मनचाहा = मन से चाहा

अकालपीड़ित = अकाल से पीड़ित

रोगपीड़ित = रोग से पीड़ित

क्षुधातुर = क्षुधा से आतुर (व्याकुल)

भूख

(iii) सम्प्रदान तत्पुरुष समास (चतुर्थी तत्पुरुष) – इसमें समस्त पद के बीच सम्प्रदान कारक के चिन्ह 'के लिए' का प्रयोग होता है। जैसे-

यज्ञवेदी = यज्ञ के लिए वेदी

छात्रावास = छात्रों के लिए वास

यज्ञशाला = यज्ञ के लिए शाला

रसोईघर = रसोई के लिए घर

मेजपोस = मेज के लिए पोस

न्यायालय = न्याय के लिए आलय

वृद्धाश्रम = वृद्धों के लिए आश्रम

मार्गव्यय = मार्ग के लिए व्यय

हथकड़ी = हाथ के लिए कड़ी

प्रौढ़शिक्षा = प्रौढ़ों के लिए शिक्षा

युद्धभूमि = युद्ध के लिए भूमि

गुरुदक्षिणा = गुरु के लिए दक्षिणा

सत्याग्रह = सत्य के लिए आग्रह

परीक्षा भवन = परीक्षा के लिए भवन

पुत्रशोक = पुत्र के लिए शोक

मालगोदाम = माल के लिए गोदाम

(iv) अपादान तत्पुरुष समास (पंचमी तत्पुरुष) – इस समास में समस्त पद के बीच अपादान कारक के चिन्ह 'से' (अलग होने के अर्थ में) का प्रयोग होता है। जैसें –

रोगमुक्त = रोग से मुक्त

नेत्रहीन = नेत्र से हीन

बुद्धिहीन = बुद्धि से हीन

धनहीन = धन से हीन

पापमुक्त = पाप से मुक्त

ऋणमुक्त = ऋण से मुक्त

जलरिक्त = जल से रिक्त

शक्तिहीन = शक्ति से हीन

जातिभ्रष्ट = जाति से भ्रष्ट

विद्यारहित = विद्या से रहित

जातबाहर = जात से बाहर

पथभ्रष्ट = पथ से भ्रष्ट

बुद्धिहीन = बुद्धि से हीन

देशनिकाला = देश से निकाला

बलहीन = बल से हीन

ईश्वरविमुख = ईश्वर से विमुख

लोकोत्तर = लोक से परे

धर्मविमुख = धर्म से विमुख

(v) सम्बन्ध तत्पुरुष समास (षष्ठी तत्पुरुष) – इसमें समस्त पद के बीच सम्बन्ध कारक के चिन्ह 'का, की, के' का प्रयोग होता है। जैसे –

भारतरत्न = भारत का रत्न
सेनानायक = सेना का नायक
पुष्पवर्षा = पुष्प की वर्षा
कठपुतली = काठ की पुतली
रामोपासक = राम का उपासक
दिनचर्या = दिन की चर्या
राजनीति = राजा की नीति
वीरकन्या = वीर की कन्या
भूकंप = भू का कंप
राजाज्ञा = राजा की आज्ञा

प्राणनाथ = प्राण के नाथ
घुड़दौड़ = घोड़ों की दौड़
दीपावली = दीपों की आवली (कतार)
गंगाजल = गंगा का जल
पद्यांश = पद का अंश
कन्यादान = कन्या का दान
सेनाध्यक्ष = सेना का अध्यक्ष
चन्द्रोदय = चन्द्र का उदय
सुरवृन्द = सुरों का वृन्द

(vi) अधिकरण तत्पुरुष समास (सप्तमी तत्पुरुष) – इसमें समस्त पद के बीच अधिकरण कारक के चिन्ह 'में, पर' का प्रयोग होता है। जैसे –

लोकप्रिय = लोक में प्रिय
दानवीर = दान में वीर
आपबीती = आप पर बीती
रेलगाड़ी = पटरी पर चलने वाली गाड़ी
नीतिनिपुण = नीति में निपुण
आनन्दमग्न = आनन्द में मग्न
घृतान्न = घी में पका अन्न
मुनिश्रेष्ठ = मुनियों में श्रेष्ठ
कार्यकुशल = कार्य में कुशल
सर्वोत्तम = सर्व में उत्तम

वहानारूढ़ = वाहन पर आरूढ़
आत्मनिर्भर = आत्मा पर निर्भर
वनवास = वन में वास
आत्मविश्वास = आत्मा पर विश्वास
घुड़सवार = घोड़े पर सवार
पुरुषसिंह = पुरुषों में सिंह
हरफनमौला = हरफन में मौला
कविश्रेष्ठ = कवियों में श्रेष्ठ
कविपुंगव = कवियों में पुंगव
सिंहासनारुढ़ = सिंहासन पर आरुढ़ (सवार)

नोट :- नञ् समास – जिस शब्द में 'न' के अर्थ में 'अ' अथवा अन का प्रयोग हो वह नञ् तत्पुरुष कहलाता है। जैसे –

असभ्य = न सभ्य

अनन्त = न अन्त

अभाव = न भाव

अनपढ़ = न पढ़

असम्भव = न सम्भव

अन्याय = न न्याय

अचल = न चल

अधर्म = न धर्म

अकृतम् = न कृतम्

03. कर्मधारय समास – जिस समास का पूर्व पद विशेषण तथा उत्तर पद विशेष्य होता है। कर्मधारय समास कहलाता है। इसमें उत्तरपद प्रधान होता है।

कर्मधारय समास के विग्रह करने पर दोनों पद के मध्य में है जो, के समान, रूपी आदि आते है।

उदाहरण:

महाकवि = महान है जो कवि

कमलनयन = कमल के समान नयन

चरणकमल = कमल के समान चरण

प्रिसखा = प्रिय है जो सखा

अधपका = आधा है जो पका

चन्द्रमुखी = चन्द्र के समान मुखवाली

भुजदंड = दंड के समान भुजा

मृगनयन = मृग के समान नयन

परमेश्वर = परम है जो ईश्वर

महाकाल = महान है जो काल

अधमरा = आधा है जो मरा

लालमणि = लाल है जो मणि

सत् धर्म = सत् है जो धर्म

नीलोत्पल = नीला है जो कमल

सुपुरुष = सुन्दर है जो पुरुष

वचनामृत = वचन रुपी अमृत

संसारसागर = संसार रूपी सागर

सद् भावना = सत् है जो भावना

कापुरुष = कायर है जो पुरुष

प्राणधन = प्राण रुपी धन

देहलता = देह रुपी लता

चन्द्रवदन = चन्द्र के समान वदन

गुरुदेव = गुरु रुपी देवी या देव के समान गुरु

घनश्याम = घन के समान श्याम

कीर्तिलता = कीर्ति रुपी लता

सज्जन = सत् है जो जन

कालीमिर्च = काली है जो मिर्च

क्रोधाग्नि = क्रोध रुपी अग्नि

3. **कृताकृत** = किया बेकिया (किसी काम को अधूरा छोड़ देना)

अपवाद – महावीर = महान है जो वीर

नीलकंठ = नील है जो कंठ

श्वेताम्बर = श्वेत है जो अम्बर

पीताम्बर = पीत है जो अम्बर

महात्मा = महान है जो आत्मा

लम्बोदर = लम्बा है जो उदर

04. द्विगु समास – जिस समास में पूर्व पद संख्यावाची हो तथा उत्तरपद प्रधान हो द्विगु समास कहलाता है।

समूह/समाहार

उदाहरण:

चौराहा = चार राहों का समूह

सप्तशती = सात सैकड़ो का समूह

नवरत्न = नौ रत्नों का समूह

सप्तमंजिल = सात मंजिलों का समूह

नवरात्र = नौ रात्रियों का समूह

पंचवटी = पाँच वटों का समूह

त्रिगुण = तीन गुणों का समाहार

त्रिभुज = तीन भुजाओं वाली आकृति

सप्ताह = सात दिनों का समूह

सप्तदीप = सात दीपों का समूह

दोपहर = दो पहरों का समूह

त्रिभुवन = तीन भवनों का समूह

त्रिशूल = तीन शूलों का समूह

तिकोना = तीन कोनों का समूह

चवन्नी = चार आनों का समूह

सतसई = सात सौ का समाहार

पंसेरी = पाँच सेरों का समाहार

चौमासा = चार मासों का समाहार

अष्टाध्यायी = आठ अध्यायों का समाहार

पंजाब = पाँच आबो की भूमि

चतुर्दिक = चार दिशाओं का समाहार

अपवाद

- **त्रिनेत्र** = तीन नेत्रों का समाहार
- **त्रिदेव** = तीन देवों का समूह
- **दशानन** = दस आननों का समूह
- **पंचानन** = पाँच आननों का समाहार
- **षडानन** = छः आननों का समूह
- **चतुरानन** = चार आननों का समूह

द्विगु

05. द्वन्द्व समास – जिस समास के दोनों पद प्रधान होते है तथा दोनों का स्वतन्त्र अस्तित्व होता है। तथा एक दूसरे के विलोम हो द्वन्द्व समास कहलाते है।

इसके तीन भेद होते है।

इसके तीन भेद होते है -

(i). इतरेतर द्वन्द्व समास – इस समास में सभी पद प्रधान होते है और प्रत्येक दो पदों के बीच 'और' का प्रयोग होता है। उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते है। जैसे –

मां – बाप = मां और बाप

सीता-राम = सीता और राम

हरिहर = हरि और हर

राधा-कृष्ण = राधा और कृष्ण

लोटा-डोरी = लोटा और डोरी

अन्न-जल = अन्न और जल

कृष्णार्जुन = कृष्ण और अर्जुन

पच्चीस = पाँच और बीस

इकतालीस = एक और चालीस

अमीर-गरीब = अमीर और गरीब

भाई-बहन = भाई और बहन

लव-कुश = लव और कुश

तन-मन-धन = तन और मन और धन

जलवायु = जल और वायु

धनुर्बाण = धनुष और बाण

ज्ञान-विज्ञान = ज्ञान और विज्ञान

अड़सठ = आठ और साठ

इक्यावे = एक और नब्बे

(ii). समाहार द्वन्द्व समास – जिस समस्त पद में दोनों पद प्रधान हो और दोनों पद बहुवचन में प्रयुक्त हो उसे समाहार द्वन्द्व कहते है। जैसे –

- **दाल - रोटी** = दाल और रोटी
- **फल - फूल** = फल और फूल
- **धन - दौलत** = धन और दौलत
- **हाथ - पैर** = हाथ और पैर
- **चाल - चलन** = चाल और चलन
- **चाय - पानी** = चाय और पानी
- **कपड़ा - लत्ता** = कपड़ा और लत्ता
- **साग - पात** = साग और पात
- **घास - फूस** = घास और फूस
- **घर - द्वार** = घर और द्वार

(iii). **वैकल्पिक द्वन्द्व समास** – जिस समस्त पद में दो विरोधी शब्दो का प्रयोग हो और प्रत्येक दो पदों के बीच या, अथवा में पाया जाये उसे वैकल्पिक द्वन्द्व समास कहते है। जैसे –

थोड़ा-बहुत = थोड़ा या बहुत

पाप-पुण्य = पाप या पुण्य

आज-कल = आज या कल

शीतोष्ण = शीत या ऊष्ण

जीवन-मरण = जीवन या मरण

सुरासुर = सुर या असुर

देवासुर = देव या असुर

सुख-दुख = सुख या दुख

ठण्डा-गर्म = ठण्डा या गर्म

भला-बुरा = भला या बुरा

लाभालाभ = लाभ या अलाभ

ऊंच-नीच = ऊंच या नीच

दो-चार = दो या चार

कर्त्तव्याकर्त्तव्य = कर्त्तव्य या अकर्त्तव्य

अपना-पराया = अपना या पराया

गुण-दोष = गुण या दोष

06. बहुव्रीहि समास – जिस समास में दोनों पद अप्रधान हो तथा दो पदों के माध्यम से तीसरे अर्थ का बोध हो।

मुख

दशानन = दस है आनन जिसके (रावण)

दशरथनंदन = दशरथ के नंदन है जो (राम)

प्रधानमंत्री = मंत्रियों में प्रधान है जो (प्रधानमंत्री)

चतुर्भुज = चार है भुजाएं है जिसकी (विष्णु)

हृषीकेश = हृषीक (इंद्रियों) के ईश है जो (विष्णु)

पद्मनाभ = पद्म (कमल) है नाभि में जिसके (विष्णु)

हाथ

चक्रपाणि = चक्र है पाणि में जिसके (विष्णु)

विषधर = विष को धारण करने वाला (सर्प)

मृत्युंजय = मृत्यु को जीतने वाला (शंकर)

महावीर = महान वीर है जो (हनुमान)

निशाचर = निशा में विचरण करने वाला (राक्षस)

पीतांबर = पीत है अंबर जिसका (कृष्ण)

पंकज = पंक में पैदा हो जो (कमल)

मृगेंद्र = मृगों का इन्द्र जो (सिंह)

गिरिधर = गिरि को धारण करने वाला (कृष्ण)

पंचानन = पाँच है आनन है जिसके (हनुमान)

षडानन = छह आनन है जिसके (कार्तिकेय)

लम्बोदर = लम्बा है उदर जिसका (गणेश)

सपरिवार = परिवार के साथ है जो (सपरिवार)

नीलकंठ = नीला है कंठ जिसका (शिव)

चन्द्रचूड़ = चन्द्र है चूड़ पर जिसके (शिव)

शाखामृग = शाखाओं पर विचरण करने वाला (वानर)

पतझड़ = पत्तों का झड़ जाना (ऋतु विशेष)

अंशुमाली = अंशु है माला जिसकी (सूर्य)

एकदंत = एक है दाँत जिनका (गणेश जी)